स्वांगला – बोली में पद संरचना

डॉ0 अनिता कुमारी
सहायक प्राध्यापक
राजकीय महाविद्यालय कुकुमसेरी
जिला लाहौल स्पिति (हि0 प्र0)

स्वांगला – बोली में पद संरचना

भाषा–विज्ञान के अंगों की चर्चा में पद विज्ञान या रूप विज्ञान को उसका मुख्य अंग माना गया है। प्रायः एक विचार को प्रकट करने के लिए भाषा में एक ही वाक्य का प्रयोग होता है। वाक्य का विश्लेषण पदों में किया जाता है। अतः पद विज्ञान में इन्ही पदों का विचार किया जाता है। पद या रूप एक दूसरे के पर्यायवाची हैं। सामान्यतः शब्द व पद के लिए व्यवहार में 'शब्द' का ही प्रयोग होता है परन्तु इनमें परस्पर भेद है। शब्द एक सार्थ इकाई है जबकि शब्द का वाक्य में प्रयोग समर्थरूप 'पद' कहलाता है।

संस्कृत में 'शब्द' या मूल रूप को 'प्रकृति' या 'प्रतिपादित' कहा गया है और सम्बन्ध–स्थापन के लिये जोड़े जाने वाले तत्व को 'प्रत्यय'। महाभाष्यकार पतंजलि कहते हैं : नापि केवला प्रकृतिः प्रयोगक्तव्या नापि केवल प्रत्ययः। अर्थात वाक्य में न तो केवल 'प्रकृति' का प्रयोग हो सकता है, न केवल 'प्रत्यय' का। दोनों मिलकर प्रयुक्त होते हैं। दोनों के मिलने से जो बनता है वही 'पद' का 'रूप' है।[1]

पाणिनी के अनुसार सुबन्त तथा तिड.न्त को पद कहते है।[2] यहॉ प्रत्यय या विभक्ति को सुप और तिड. कहा गया है। स्वांगला – बोली में भी पद निर्माण प्रक्रिया में विभक्तियों की समानता संस्कृत के समान है जिसे निम्नलिखित उदाहरणों द्वारा दर्शाया गया है–

प्रातिपदित		**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
संस्कृत–भाषा	'राम'	रामः	रामौ	रामाः
स्वांगला–बोली	'राम'	रामे	रामागुई	रामाज़ि

इसी प्रकार स्वांगला–बोली में भी सभी विभक्तियों में सुबन्त पदों का निर्माण सम्भव है। यही नियम क्रिया पदों पर भी घटित होता है। क्रिया पद का मूल रूप धातु है तथा धातु के अन्त में तिड. प्रत्यय लगाकर क्रिया रूप बनते हैं।

संस्कृत 'दा' धातु का स्वांगला–बोली में रंड्री धातु समानार्थक है जिस प्रकार संस्कृत के बहुत से धातुओं के पीछे ति, तः और अन्ति इत्यादि प्रत्यय जोड़कर विभिन्न लकारिक रूप बनाए जाते हैं उसी प्रकार स्वांगला बोली में भी धातु के पीछे प्रत्यय जोड़कर विभिन्न कालों से सम्बन्धित रूप बनाए जाते हैं। इस बोली में हर धातु का अन्त ई से होता है जैसे–

देना– रंड्री जलाना– फरची़

लेना– लेहपची छिपाना– प्याची

.....

1 भोलानाथ तिवारी, भाषा विज्ञान, पृ0 196

2 'सुप्तिङन्तं पदम' अष्टा0 1/4/16

उदाहरणतया–

दा धातु (संस्कृत–भाषा में)

लट् लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरूष	ददाति	दत्तः	ददति
मध्यम पुरूष	ददासि	दत्थः	दत्थ
उत्तम पुरूष	ददामि	दद्वः	दद्यः

रंड्रा (देना) (स्वांगला–बोली में)

लट् लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरूष	रंड्रा	रंड्रादौगु	रंड्रादौरे
मध्यम पुरूष	रंड्रादन	रंड्रादोशी	रंड्रादई
उत्तम पुरूष	रंड्रादग	रंड्रादोशी	रंड्रादई

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि किसी भी प्रातिपदिक या धातु को पद बनाए बिना उसका वाक्यगत प्रयोग नहीं हो सकता। जब पद का वाक्यगत प्रयोग होता है तो पद के साथ सम्बन्ध तत्व भी जुड़ जामता है। संसार की बहुत सी भाषाओं में स्वतन्त्र शब्द भी सम्बन्धतत्व का कार्य करते हैं। हिन्दी के कारक चिन्ह जैसे ने, को, से, पर, में, का, की, के आदि या सारे परसर्ग इसी वर्ग के हैं, और उनका कार्य दो या अधिक शब्दों का वाक्य में सम्बन्ध दिखलाना ही है। हिन्दी में वाक्यों का स्थान परिवर्तन करने पर वाक्यों में प्रयुक्त शब्द के अर्थ में भी परिवर्तन हो जाता है परन्तु संस्कृत – भाषा के समान स्वांगला–बोली में भी स्थान परिवर्तन होने पर भी वाक्य में शब्द का अर्थ परिवर्तित नहीं होता।

'रामा' रूप बनता हैं इस बोली की मुख्य विशेषता यह है ि कइस बोली में भी विभक्तियों की समानता संस्कृत के समान है। इस तथ्य के स्पष्टीकरणार्थ अकारान्त पुलिड.ग शब्द 'राम' का संस्कृत और स्वांगला–बोली में रूप अगलिखित है–

संस्कृत–भाषा में 'राम' शब्द के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रामः	रामौ	रामाः
द्वितीया	रामम्	रामौ	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
चतुर्थी	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
पंचमी	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
षष्ठी	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
सप्तमी	रामे	रामयोः	रामेषु
सम्बोधन	हे रामः!	ळे रामो!	ळे रामा!

इसी प्रकार 'राम' और 'आरती' शब्द के निम्नलिखित रूप स्वांगला–बोली में उपलब्ध हैं–

अकारान्त पुल्लिंग – 'राम'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रामे	रामागुई	रामाज़ि
द्वितीय	रामाबि	रामागुदि	रामादि
तृतीया	रामे	रामागुइ	रामाज़ि
चतुर्थी	रामाबि	रामागुदि	रामादि

स्वांगला–बोली में भी जब पद का वाक्यगत प्रयोग होता है तो पद के साथ सम्बन्ध तत्व भी जुड़ जाता है। यथा – रामे रावण राजदो राम ने रावण को मारा' इस वाक्य में 'राम' प्रतिपदिक के साथ 'ए' सम्बन्ध तत्व जुड़ा है। इसी सम्बन्ध तत्व को विभक्ति या कारक चिन्ह 'परसर्ग' कहते हैं। इस तथ्य की पुष्टि निम्न उदाहरण से की है–

मूल	**प्रातिपदिक**	**सम्बन्धतत्व**	**पद**	**अर्थ**
संस्कृत–भाषा	'राम'	सु 'सु'	रामः	'राम ने'
स्वांगला–बोली	'राम'	ए 'ने'	रामे	'राम ने'

भाषा में सम्बन्धतत्व द्वारा प्रमुखताः काल, लिंग, पुरूष, वचन तथा कारक आदि की अभिव्यक्ति होती है। भाषा– विज्ञान में मूल शब्द को अर्थ तत्व तथा सम्बन्ध तत्व को रूप मात्र कहा जाता है। अर्थतत्व से पद के अर्थ का ज्ञान तथा सम्बन्ध ततव से वाक्य में अन्य पदो ंके साथ उस पद के सम्बन्ध का ज्ञान होता है।